



पाइका वदिरोह को प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का दर्जा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सरकार द्वारा कहा गया है कि 1817 के पाइका वदिरोह को अगले शैक्षिक सत्र से इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' के रूप में स्थान दिया जाएगा।

साथ ही केंद्र सरकार ने देश भर में इसकी 200वीं वर्षगांठ मनाने के लिये 200 करोड़ रुपए आवंटित किये हैं। उल्लेखनीय है कि अभी तक 1857 के सपिही वदिरोह को ही प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है।

क्या था पाइका वदिरोह ?

- पाइका वदिरोह 1817 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की शोषणकारी नीतियों के विरुद्ध उड़ीसा में पाइका जाति के लोगों द्वारा किया गया एक सशस्त्र, व्यापक आधार वाला और संगठित वदिरोह था।
- पाइका उड़ीसा की एक पारंपरिक भूमिगत रक्षक सेना थी। वे योद्धाओं के रूप में वहाँ के लोगों की सेवा भी करते थे। पाइका वदिरोह के नेता बकशी जगबंधु थे। पाइका जाति भगवान जगन्नाथ को उड़ीया एकता का प्रतीक मानती थी।

वदिरोह के कारण

- पाइका वदिरोह के कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण थे। 1803 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा खुरदा (उड़ीसा) की वजिय के बाद पाइकों की शक्ति एवं प्रतिष्ठा घटने लगी।
- अंगरेजों ने खुरदा पर वजिय प्राप्त करने के बाद पाइकों की वंशानुगत लगान-मुक्त भूमि हड़प ली तथा उन्हें उनकी भूमि से वमिख कर दिया। इसके बाद कंपनी की सरकार और उसके कर्मचारियों द्वारा उनसे जबरन वसूली और उनका उत्पीड़न किया जाने लगा।
- कंपनी की जबरन वसूली वाली भू-राजस्व नीति ने किसानों और जमींदारों को एक समान रूप से प्रभावित किया।
- नई सरकार द्वारा लगाए गए करों के कारण नमक की कीमतों में वृद्धि आम लोगों के लिये तबाही का स्रोत बनकर आई।
- इसके अलावा कंपनी ने कौड़ी मुद्रा व्यवस्था को भी समाप्त कर दिया था, जो कि उड़ीसा में कंपनी के वजिय से पहले अस्तित्व में थी और जिसके तहत चांदी में कर चुकाना आवश्यक था। यही इस असंतोष का सबसे बड़ा कारण बना।
- यह वदिरोह बहुत तेज़ी से प्रांत के अन्य इलाकों जैसे पुरल, पीपली और कटक में फैल गया। इसके बाद दमन का व्यापक दौर चला, जिसमें कई लोगों को जेल में डाल दिया गया तथा कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।
- बकशी जगबंधु को अंततः 1825 में गरिफ्तार कर लिया गया और कैद में रहते हुए ही 1829 में उनकी मृत्यु हो गई।

क्यों महत्त्वपूर्ण है पाइका वदिरोह?

- 1857 का स्वाधीनता संग्राम जिसे सामान्य तौर पर देश का पहला स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है उससे भी पहले 1817 में ओडिशा में हुए पाइका वदिरोह ने पूर्वी भारत में कुछ समय के लिये ब्रिटिश राज की जड़ें हिला दी थीं।
- दरअसल, ब्रिटिश राज के विरुद्ध वदिरोह में पाइका लोगों ने अहम भूमिका निभाई थी, लेकिन किसी भी मायने में यह वदिरोह एक वर्ग विशेष के लोगों के छोटे समूह का वदिरोह भर नहीं था।
- वदिति हो कि घुमसुर जो कि वर्तमान में गंजम और कंधमाल जिलों का हिस्सा है वहाँ के आदिवासियों और अन्य वर्गों ने इस वदिरोह में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

नषिकर्ष

- पाइका वदिरोह को ओडिशा में बहुत उच्च दर्जा प्राप्त है और बच्चे अंगरेजों के विरुद्ध लड़ाई में पाइका वदिरोहियों की वीरता की कहानियाँ पढ़ते हुए बड़े होते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से इस वदिरोह को राष्ट्रीय स्तर पर वैसा महत्त्व नहीं मिला है जैसा कि मिलना चाहिये।
- लेकिन, हाल के दिनों में भारत सरकार ने इस संबंध में कुछ सराहनीय प्रयास किये हैं। इस वदिरोह को समुचित पहचान देने के लिये इसकी 200वीं वर्षगांठ को उचित रूप से मनाने के नरिणय के बाद इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का नाम दिया जा रहा है।

